"रामदरश मिश्र की कविता में चित्रित समकालीन यथार्थ "

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय , नांदेड

की पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध - विषय की रूपरेखा

शोध - छात्र

मोराळे संजय गहिनीनाथ

शोध निर्देशक

डॉ . विजय वाघ

सहाय्यक प्राध्यापक ,

तोष्णीवाल कला , वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय , सेनगांव

ता . सेनगांव जि.हिंगोली

जून 2019

" रामदरश मिश्र की कविता में चित्रित समकालीन यथार्थ "

- शोध विषय की रुपरखा

प्रस्तावना :

साहित्य को मनुष्य की अभिव्यक्ति का सौंदर्यपूर्ण रुप माना जाता है । भारतीय साहित्य में कविता तथा साहित्य के हेतु , प्रयोजन , तत्व , रुप , भाषा आदि का गहन रुप से अध्ययन किया है । साहित्य के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को स्पष्ट किया जाता है । मनुष्य का सम्बन्ध साहित्य से जुड़ा होता है । मनुष्य और साहित्य का सम्बन्ध आत्मा और शरीर जैसा होता है । मनुष्य के अलावा साहित्य का अस्तित्व कुछ भी नही है । मनुष्य को केंद्र में रखकर ही साहित्य का सृजन होता है । मनुष्य की भावनाएँ , विचार , मूल्य आदि संवेदनाओं से संस्पर्शित होकर शब्द , भाषा के माध्यम से लिपि रुप में अभिव्यक्त होते है तब जाकर साहित्य की निर्मिती होती है । कविता की गद्यविधाओं से अपनी अलग पहचान है । कविता की पहचान साधारण मनुष्य के लिए सरल बात है । कविता पद्य विधा है । जिसमें अभिव्यक्ति अपने समग्र रुप से विस्तारित होती है । कविता की भाषा का एक महत्वपुर्ण लक्षण उसकी संक्षिप्तता है ।

आज आधुनिक युग में कविता सशक्त विधा के रूप में मौजूद है , जो प्रभावशाली है । हिंदी साहित्य में अन्य विधाओं के अतिरिक्त काव्य विधा को महत्वपूर्ण स्थान है । इसमें समाज की समस्याँए उसमें चल रही घटनाएँ आदि को कम से कम शब्दों में बांधकर प्रस्तुत किया जाता है । कवि को भाषा समाज से मिलती है । उसे वो अपना व्यक्तित्व , सौंदर्य , विवेक , मूल्य अनुभव आदि से संस्कारित कर ऊर्जा भर देता है । मनुष्य के सांस्कृतिक विकास की प्रक्रिया में कवि का योगदान बहुत बड़ा होता है । काव्य द्वारा ही समाज के व्यक्ति की भावनाओं को सभी जगह से देखा और परखा जाता है । रामदरश मिश्र समकालीन प्रभावशाली कवि है । उन्होंने साहित्य - साधना का आरंभ कविता से ही किया । उनकी कविता पूरी यथार्थता के साथ अभिव्यक्त होती है । उनकी कविताओं में समकालीन जीवन की विभिन्न रूपों की कई झांकियाँ मिलती है । उनकी महत्वपूर्ण जो कविताएँ है ,

जिनके माध्यम से उनकी सामाजिक संवेदना और दृष्टि की पहचान होती है। सामान्य से सामान्य वस्तुओं में भी उन्हें कविता मिल जाती है।

समकालीन कविता में समय और परिस्थितियों के साथ ही मानवीय जीवन के संदर्भ बदलते गए है। रामदरश मिश्र के समकालीन कवि नागार्जुन , केदारनाथ अग्रवाल , धूमिल , मुक्तिबोध , केदारनाथ सिंह आलोक धन्वा , लीलाधर जगूडी , मंगेश डबराल , राम प्रसाद मिश्र , मनोज सोनकर , अरुण कमल आदि ने समकालीन कविता की दशा और दिशा को स्पष्ट किया है। तथा आम आदमी की संवेदनाओं को यथार्थता के साथ अभिव्यक्त करते हैं। रामदरश मिश्र की कविताओं में प्रकृति चित्रण , मनुष्य का अकेलापन , आशा , निराशा , भय , कुंठा तथा परिवारों के रिश्तों में कटुता , भूमंडलीकरण और आधुनिकता के युग में आम आदमी अपने अस्तित्व को अपनी जमीन की संस्कृति में ढुंढते है। मैंने उनकी काव्य साधना से प्रेरित होकर शोध प्रबंध का विषय इस प्रकार रखा है- " रामदरश मिश्र की कविता में चित्रित समकालीन यथार्थ " समकालीन हिंदी कविता में अस्वीकृति भाव , आक्रोश तथा विद्रोह अभिव्यक्त हुआ है, वह आज के कवि की संघर्षशीलता का ही परिणाम है। समकालीन कविता ने मनुष्य से जुड़े हर कोनों को छुआ है , उसकी यथार्थता को प्रकट किया है।

शोध विषय की प्रणा एवं विषय चयन :

साहित्य समाज का दर्पण होता है। परिवर्तन ही कुदरत का नियम है। आज परिवर्तन बहुत तेजी से जीवन के हर एक क्षेत्र में बढ़ रहा है। आम आदमी का रहन - सहन , उसका चिन्तन , विचार तथा मान्यताएँ बदलते काल के अनुरूप परिवर्तन से प्रभावित हो रही है। साहित्य के क्षेत्र में युग चेतना और परिवर्तनशील प्रवाहों के अनुरूप उसमें नये घुमाव हमेशा प्रतीत होते है। हिंदी साहित्य में कई विधाओं में साहित्य लिखा जा रहा है जैसे कविता, उपन्यास , कहानी , नाटक , आत्मकथा आदि किंतु इनमें कविता यह विधा महत्वपूर्ण है जिसके अंतर्गत कम से कम शब्दों में ज्यादा से ज्यादा गहरा अर्थ देने की शक्ति होती है अर्थात गागर में सागर भरने की ताकत होती है। अपनी भावनाओं को कम शब्दों के साथ गहरे अर्थ में प्रकट किया जाता है। कविता हमेशा विकसित होती है। उसमें नये - नये

रुप , काल और स्थिति के आधार पर आते है। वर्तमान जीवन की जटिलता और लगातर संघर्ष से उसमें नयापन आता है। कवि अपनी काव्य रचना में एक ओर कोई दृश्य , वस्तु या विचार को अनुभूति कल्पना के विविध रंगों में शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्ति देता है। काव्य विधा सशक्त तथा प्रभावशाली है। यह आज भी आधुनिक युग में प्रसिध्द विधा के रुप में पहचानी जाती है।

कविता भाषिक अभिव्यक्ति है। कविता के शब्द रोजमर्रा की जिन्दगी में प्रचलित , परिचित शब्द ही होते है। काव्य विधा में मेरी पहले से ही रुचि रही है। मैंने स्नातकोत्तर हिंदी शिक्षा के अंतर्गत नागार्जुन , केदारनाथ अग्रवाल , धूमिल आदि की कविताओं को पढ़ा है जिससे मैंने उनकी भावनाओं को जानने का प्रयास किया। उनकी कविताओं में यथार्थवादी चेतना , अनुभूति की सच्चाई , अभिव्यक्ति का खरापन दिखाई देते है। जब मैने सोचा की मुझे समकालीन कवियों पर गहराई से अध्ययन करना चाहिए। जिससे मुझे तत्कालीन समय की परिस्थितियों से परिचित होना है। तब मैंने रामदरश मिश्र के कविताओं से प्रभावित हुआ और ठान लिया कि मैं उनकी कविताओं को समग्र दृष्टि से जानने का प्रयास करूंगा। जब मैंने मेरे शोध निर्देशक डॉ . विजय वाघ से रामदरश मिश्र के संदर्भ में बताया तब हम दोनों ने मिलकर उनकी कविताओं के संदर्भ में विचार परामर्श किया। इसके उपरान्त मेरे शोध निर्देशक डॉ . विजय वाघ और मैंने रामदरश मिश्र की कविता पर विषय निर्धारित किया। इस विषय का नाम इस प्रकार है- ' रामदरश मिश्र की कविता में चित्रित समकालीन यथार्थ यह विषय शोध कार्य हेतू निश्चित किया।

रामदरश मिश्र के उपलब्ध शोध ग्रंथों की सूची गहराई से देखने के पश्चात हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे है कि उपर्युक्त विषय पर किसी भी विश्वविद्यालय में शोध कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है। इस विषय के संदर्भ में मैने आदरणीय गुरुवर्य डॉ . विजय वाघ से चर्चा करने पर उन्होंने मुझे इस विषय पर शोध कार्य करने के लिए सहर्ष स्वीकृति दी। उनका गाढा अनुभव और अमूल्य मार्गदर्शन मेरे शोध - प्रबन्ध की चरम उपलब्ध रहेगी।

शोधकार्य का उद्देश :

समकालीन हिंदी कविता में रामदरश मिश्र की कविताएं महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उन्होंने पद्य विधा कविता से ही लेखन प्रारंभ किया। उनको कविता के क्षेत्र में विशेष महत्व मिला। समकालीन समय और परिवेश की परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण उनके काव्य में मिलता है। यदि हमें वर्तमानकालीन समय और समाज से परिचय पाना हो तो उनके काव्यसंग्रहों को पढ़ा जा सकता है जो सराहनीय है। इसी उद्देश्यपूर्ती के लिए मैंने रामदरश मिश्र की कविता में चित्रित समकालीन यथार्थ इस विषय का चयन किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में बाहरी और भीतरी यथार्थता को स्पष्ट किया है।

आज भी समाज में पूँजीवादी वर्ग अपना जीवन भौतिक सुख - सुविधाओं को लेकर जी रहा है तो दूसरी और आम आदमी इन सुख सुविधाओं से वंचित है तथा वे मूलभूत समस्याओं से रोजमर्रा के जीवन में संघर्ष करते हुए दिखाई देते है। समाज में चल रहे इस विषमता का चित्रण रामदरश मिश्र ने अपनी कविताओं में पूरी यथार्थता के साथ प्रकट किया है। आज हम देखते है की अनुसंधान कर्ताओं ने रामदरश मिश्र की रचनाओं को लेकर कई अंगो से अपने अध्ययन का विषय बनाया है। उनकी रचनाओं पर कई विश्वविद्यालय में शोध कार्य हो रहा है। उनके पद्य तथा गद्य दोनों साहित्य को लेकर अलग - अलग अंगो से अनुसंधान हुआ है तथा हो रहा है। आज कल अनुसंधान कर्ता कोई भी विषय लेकर अनुसंधान अपनी दृष्टि से करता है जिसमें उस रचनाकार के रचनाओं को सही मायने में न्याय नहीं दे पाता। इसी अभावपूर्ति के लिए मेरा रामदरश मिश्र की कविताओं पर शोध प्रबंध लिखने का प्रयास रहेगा।

शोध विषय का महत्व :

हिन्दी साहित्य में रामदरश मिश्र समकालीन कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर रहे है। वर्तमान समय में समाज के अंतर्गत सामाजिक , राजनैतिक , आर्थिक , धार्मिक तथा सांस्कृतिक विषमता बढ़ती जा रही है जिस कारण समाज में शोषण, बेरोजगारी, भूखमारी , महंगाई , भ्रष्टाचार, अनाचार, दूराचार , प्रांतवाद , भाषावाद , मोहभंग , सांप्रदायिकता आदि समस्या बढ़ रही है। इन समस्याओं के

कारण समाज विघटित हो रहा है। इसका यथार्थ चित्रण हमें उनके कविताओं में मिलता है। उनका काव्य संघर्ष का काव्य है। मानव और मानव मूल्यों की सम्पूर्ण प्रस्तुति उनके रचनाओं में मिलती है। जनजीवन का वास्तविक दर्शन भी महत्वपुर्ण बिन्दु है जो वास्तविक स्थिति का यथार्थ चित्रण स्पष्ट करता है। उनका प्रकृति प्रति बहुत लगाव है। आम आदमी की पीडा , संघर्ष , भ्रष्ट राजनीति , भूमंडलीकरण , गरिबी , भुखमारी , लाचारी , आशा - निराशा आदि का यथार्थ चित्रण उन्होंने अपनी रचनाओं में बखुबी से निभाया है। इन सभी स्थिति को जानने के लिए प्रस्तुत विषय का अनुसंधान महत्वपुर्ण साबित होगा।

रामदरश मिश्र के काव्य में आम आदमी की संवेदना अभिव्यक्त होती है। उनकी कविता आम आदमी के सत्य और यथार्थ का आईना है जो काव्य जीवन से अभिन्न रुप में जुड़ी हुई है। उनका सामाजिक दायित्व साठोत्तरी जनप्रति आधार का जीवन यथार्थ और जनजीवन से परिपूर्ण है। जीवन की सच्चाई को पहचानते हुए अन्याय एवं शोषण के खिलाफ संघर्ष को व्यापकता से सामाजिक स्तर पर सृजन किया है जिस कारण उन्होंने जीवन विषयक दृष्टीकोण और सामाजिक यथार्थ को स्पष्ट किया है। इन सभी सामाजिक समस्या के लिए संघर्ष चेतना जरुरी है। इन सभी परिस्थितीओं को समझने के लिए रामदरश मिश्र पर किया जाने वाला अनुसंधान महत्वपूर्ण साबित होगा।

अनुसंधान पध्दतीयाँ :

प्रत्येक शोधार्थी का अपना अलग दृष्टिकोण होता है। अपने दृष्टि से वह शोधविषय को परखने की और समझने की कोशिश करता है। अतः अपने शोधकार्य को मौलिक रूप से प्रस्तुत करने के लिए ओलोचनात्मक , विश्लेषणात्मक एवं सैद्धांतिक शोध पध्दतियों का उपयोग किया जाएगा।

पूर्ववृत्ती शोध कार्य :

इससे पूर्व रामदरश मिश्रजी के साहित्य पर जो शोध कार्य हुआ है , वह इस प्रकार है :

1) रामदरश मिश्र की सृजन यात्रा :- डॉ . महावीरसिंह चौहान
2) उपन्यासकार रामदरश मिश्र :- सं.डॉ. वेदप्रकाश अभिताभ , डॉ . प्रेमकुमार
3) कथाकार रामदरश मिश्र :- डॉ . सुर्यदिन यादव

4) रचनाकार रामदरश मिश्र :- डॉ . नित्यानंद तिवारी , डॉ . ज्ञानचंद्र गुप्त

5) रामदरश मिश्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व :- डॉ . फुलबदन यादव

6) रामादरश मिश्र की कहानियाँ :- प्रा . अमी दवे

7) रामदरश मिश्र के उपन्यासो में घर परिवार :- डॉ . यशवंत गोस्वामी

8) रामदरश मिश्र के उपन्यासों में नारी : - प्रा . मनहर गोस्वामी

इन सब शोध प्रबंधों में मिश्रजी के समग्र साहित्य पर शोध कार्य किया गया है । लेकिन मैने अपने पूर्ववर्ती शोध प्रबंधों से भिन्न दृष्टिकोण आपनाकर ' मिश्रजी के काव्य में समकालीन यथार्थ का चित्रण ' को अनुसंधान करने का प्रयास किया है । विविध शोध प्रबंधो एवं आलोचनात्मक ग्रंथों में मिश्रजी के काव्य विषयक सामग्री आवश्य मिलती है किंतु मिश्रजी के काव्य संग्रहों में ' समकालीन यथार्थ का चित्रण ' को गहराई से अनुसंधान करने का मेरा प्रयास रहेगा ।

शोध विषय की रुपरेखा :

शोध विषय को अध्ययन की सुविधा हेतु सुचारु ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए । शोध कार्य को अच्छे रुप से सम्पन्न करने के लिए उसका नियोजन बहुत महत्वपूर्ण है । मैने अध्ययन की सुविधा हेतु प्रस्तूत शोध विषय को छहः अध्यायों में विभाजित कर शोध विषय का यथार्थ चिन्तन करने का संकल्प किया है ।

'रामदरश मिश्र की कविता में चित्रित समकालीन यथार्थ' इस विषय के छहः अध्याय निम्नलिखित है :

प्रथम अध्याय	:-	रामदर मिश्र व्यक्तित्व एवं कृतित्व
द्वितीय अध्याय	:-	समकालीन कविता और यथार्थ
तृतीय अध्याय	:-	रामदरश मिश्र की कविता और समकालीन यथार्थ
चतुर्थ अध्याय	:-	समकालीन कविता में रामदरश मिश्र का महत्व
पंचम अध्याय	:-	रामदरश मिश्र की कविता : भाषा और शैली
षष्ठम अध्याय	:-	उपसंहार और निष्कर्ष

प्रथम अध्याय : - रामदरश मिश्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत रामदरश मिश्र के जीवन और सृजन पर प्रकाश डाला जायेगा | उनके जीवन के व्यक्तित्व के अंतर्गत उनका जन्म , बचपन , विवाह , परिवार , चरित्र , स्वभाव , रुप , वर्णन , राजनीति सम्बन्धी विचार , शिक्षा , प्रारंभिक , हाईस्कूल , उच्चशिक्षा तथा नौकरी आदि विषयों को लेकर व्यापक रूप से लिखा जायेगा | और उनके सृजनात्मक कृतित्व के अन्तर्गत उन्होंने जो साहित्य साधना की है उसका क्रमशः विवेचन किया जायेगा | कवि , उपन्यासकार , आलोचक विविध सृजन इन मुद्यो को लेकर व्यापक रूप से विश्लेषित किया जायेगा |

द्वितीय अध्याय : समकालीन कविता और यथार्थ

इस अध्याय के अंतर्गत समकालीन कविता की परिभाषा से लेकर परिस्थितीयों तक को स्पष्ट किया जायेगा। स्वतंत्रता के पश्चात तत्कालीन कवियों ने जैसे- नागार्जुन , केदारनाथ , धूमिल आदि कवियों ने समाज में चल रही जातियता , अन्धश्रध्दा , सामाजिक समस्याँ आदि विषयों को अपनी कविताओं मे स्थान दिया है | उनकी कविताओं में प्रेम , प्रकृति , सौंदर्य और कल्पना की जगह समाज के वास्तविक यथार्थता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है | रामदरश मिश्र की कविताएँ मानवीयता , उदारता, विश्वबंधुत्व की भावना को स्पष्ट करती है। इसलिए समकालीन कवियों की तरह ही उनको महत्वपूर्ण समकालीन कवि कहा जायेगा।

तृतीय अध्याय : - रामदरश मिश्र की कविता और समकालीन यथार्थ

इस अध्याय के अंतर्गत रामदरश मिश्र की समग्र कविताओं में चित्रित मानवीय संवेदना , कटुता , कठोरता , गंभीरता को सप्रमाण अभिव्यक्त किया जायेगा | उनकी यादे कविता में अपनी जमीन से गहरे जुडाव की बात बहुत प्रभावशाली ढंग से और यथार्थता के साथ अभिव्यक्त करते है। उनकी कविताऐं उपेक्षित एवं एकाकी जीवन को अधोरेखित करती है जो उल्लेखनीय है | पारदर्शी , स्पष्टता और सरल अभिव्यक्ति उनके काव्य का स्वभाव है। सामाजिक यथार्थ , धार्मिक यथार्थ , राजनीतिक यथार्थ आदि को व्यापक रुप से स्पष्ट किया जायेगा | जिससे उनकी काव्यसाधना को समकालीन कविताओं में महत्वपूर्ण स्थान मिल पायेगा |

चतुर्थ अध्याय : - समकालीन कविता में रामदरश मिश्र का महत्व

इस अध्याय के अंतर्गत रामदरश मिश्र की कविताएँ समकालीन कविता में अपना अलग अस्तित्व बनाती है। इसको स्पष्ट किया जायेगा। ‘ पक गई है धूप ' की कविताएँ परेशान करनेवाली है कवि मानवीय पीडा को व्यक्त करते समय निर्भयता से सच्चाई के साथ अभिव्यक्त करते है। उनकी कविताओं में प्रेम , प्रकृति और सौंदर्य के साथ साथ परिवेशजगत के जागरुकता के भी दर्शन होते है। जिसे पुरी यथार्थता के साथ स्पष्ट किया जायेगा | उनकी कविता में जहाँ पृष्ठभूमि में सामाजिक जीवन संदर्भ है | इसको इस अध्याय में विस्तारपूर्वक लिखा जायेगा | जो एक दृष्टि से अत्यंत मौलिक होगा |

पंचम अध्याय : रामदरश मिश्र की कविता : भाषा और शैली

इस अध्याय के अंतर्गत रामदरश मिश्र की कविताओं में आये हुये शिल्प विन्यास अत्यंत सहज सरल सपाट बयानी भाषा में है उसे स्पष्ट किया जायेगा | उनके विचारों के अनुरूप ही उनका शिल्पविधान अत्यंत स्वाभाविक रूप से कविताओं में प्रयुक्त हुआ है | उपमान , योजना , प्रतीक , बिंब , भाषा , शैली , मुहावरे आदि काव्य तत्वो के आयामों को लेकर स्पष्ट किया जायेगा |

षष्ठम अध्याय : - उपसंहार एवं निष्कर्ष

इस अध्याय के अंतर्गत समस्त अध्याओं का सारांश दिया जायेगा | तथा शोध विषय के प्रथम अध्याय से लेकर पंचम अध्याय तक के निष्कर्ष को संक्षिप्त रुप में रखा जायेगा | और शोध विषय के आधारभूत अध्ययन को संक्षेप में निर्देश करते हुए अध्ययन के अंतिम निष्कर्ष को रखा जायेगा | साथ ही ग्रंथसूची में आधार ग्रंथ , सहायक ग्रंथ और शब्दकोश की सूची दी गई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

अ) आधार ग्रंथ सूची :

पथ के गीत	:-	राजेंद्र एंड ब्रदर्स , बलिया (1951)
बैरंग बेनाम चिट्टियाँ	:-	आस्था प्रकाशन , अहमदाबाद (1962)
पक गई है धूप	:-	भारतीय ज्ञानपीठ , दिल्ली (1969)
कंधे पर सूरज	:-	राधाकृष्ण प्रकाशन , दिल्ली (1977)
दिन एक नदी बन गया	:-	नेशनल पब्लिशिंग हाउस (1984) अब वाणी प्रकाशन
मेरे प्रिय गीत	:-	कंदर्प प्रकाशन , दिल्ली (1985)
जुलूस कहा जा रहा है	:-	प्रभात प्रकाशन दिल्ली (1989)
आग कुछ नही बोलती	:-	इंद्रपस्थ प्रकाश दिल्ली (1992)
शब्द - सेतु	:-	साहित्य सहकार , दिल्ली (1994)
बारिश में भीगते बच्चे	:-	वाणी प्रकाशन दिल्ली (1996)
ऐसे में जब कभी	:-	नमन प्रकाशन दिल्ली (1999)
मेरे गीत	:-	नमन प्रकाशन दिल्ली (2003)

ब) सहायक ग्रंथ सूची

1) समकालीन कविता की भूमिका :-	10 विश्वभरनाथ उपाध्याय
	मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया , नई दिल्ली .
2) समकालीन समीक्षा के धरातल :-	डॉ . चम्पाकुमारी सिंह
	मितल एण्ड सन्स दिल्ली 2009
3) समकालीन कविता की भारतीयता :-	ए . अरविंदाक्षन
	राधाकृष्ण प्रकाश नई दिल्ली प्र . सं . 1998

4) समकालीन हिंदी कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर :- डॉ . सरजूप्रसाद मिश्र

अमन प्रकाशन 104A / 118 रामबाग ,

कानपूर 208012 प्र.सं. 2011

5) साठोत्तरी हिंदी काव्य और सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति : - डॉ . चंद्रभूषण सिंहा

विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी - 1 प्र . सं . 1987

क) शब्दकोश

1) हिंदी भाषा शब्दकोश :- डॉ . हरदेव बाहरी , राजपाल प्रकाशन दिल्ली संस्करण 1999

शोध – छात्र
मोराळ संजय गहिनीनाथ
एम.ए.बी.एड्. नेट.

शोध निर्देशक
डॉ . विजय वाघ
सहाय्यक प्राध्यापक ,
तोष्णीवाल कला , वाणिज्य एवं विज्ञान
महाविद्यालय , सेनगांव
ता . सेनगांव जि.हिंगोली